जुद्ध न होवे

खेलताहर

1. दुरगी : एगो पल्टनिया के घरनी (60 बरीस)
2. सन्तू : दुरगी के मँझिला बेटा (18 बरीस)
3. मन्तू : दुरगी के छोटका बेटा (14 बरीस)
4. बहादुर : दुरगी के गाँव के पल्टनिया।

[घर के इयोढ़ी में दुरगी एगो खटिया पर बइठल सुपली में चाउर फटकइत-बीछइत। सामने देवाल पर दुरगी के पति के फोटो टँगल हे, जेकरा पर फूल के माला पेन्हावल हे। माला के ताजा फूल से बुझा जा हे कि हाले में ओकर पति के इंतकाल भेल हे।

सामने से बहादुर (25-26 साल के गबरू जुआन, फौजी लेवास में) पाँव दाबले सल्ले-सल्ले भीरी आवऽ हे आउ खटिया से तनि दूरे खाड़ हो जा हे। एकटक दुरगी के अप्पन काम में मसगूल निहारइत रहऽ हे। कुछ छन के बाद, ओकर धेयान न टूटइत देख के बहादुर टोकऽ हे]

बहादुर : **(मसुआयल सुर में)** दुरगी चाची!

दुरगी : **(चउँकइत)** अरे बेटा, बहादुर! उहाँ काहे खाड़ हे? आव, आव, आव! कखनी से खाड़ हें, चुपेचाप?

बहादुर : परनाम चाची! अबकहीं तो आवइते ही, तोरा मसगूल देख के सोचली कि तूँ अप्पन काम निपटा लऽ, तऽ हम बोली।

लेखक-परिचय :

नाम : डॉ० रामनन्दन

जनम-तिथि : 15-1-1932

जनम-अस्थान : सिमरी, मसौढ़ी, पटना

पिता के नाम : बी. पी. सिन्हा

सिच्छा : एम. ए., पी–एच. डी.

पेसा : प्राध्यापक, भूगोल विभाग, पटना विस्वविद्यालय
विभागाध्यक्ष (भूगोल) बड़ौदा विस्वविद्यालय

परकासित पुस्तक :

1. अदमी आ देओता (उपन्यास), 2. कौमुदी महोत्सव (नाटक), 3. कइएक किताब आउ 'बिहान' पतरिका के सम्पादन।

पाठ–परिचय :

नाटक के एगो छोटहन रूप होवऽ हे एकांकी। बड़का नाटक में ढेर मनी अंक होवऽ हे, जबकि एकांकी में एक्के गो। एही से एकरा में नाटक के सभे गुन रहऽ हे। कोई भी नाटक इया एकांकी के अध्ययन करे से पहिले ओकर कुछ तत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेवे के चाहीं। नाटक के परमुख तत्व हे—कथावस्तु, पात्र आउ ओकर चरित्र–चित्रन, कथोपकथन इया संवाद, भासा–सैली आउ उद्देस्य। नाटक में जहाँ मुख्य पात्र इया नायक के सउँसे जिनगी के कथा कहल जाहे, उहँइ एकांकी में संकलन–त्रय पर बिसेस धेयान देल जाहे। संकलन–त्रय में अस्थान, समय आउ घटना एक से जादे न होवे के चाही। एगो आउ धेयान देवे जुकुर बात ई हे कि नाटक इया एकांकी में नाटककार अपना तरफ से कुछ न कहऽ हथ, सभे बात पात्र के मुँह से ही कहलावल जाहे।

श्री रामईश्वर सिंह : अध्यच्छ महोदय, हम परस्ताव करऽ ही ई जे गैर-सरकारी परस्ताव हे, एकरा लागी अगर सभा में समय नयँ हे तऽ दूसर सभा में एकरा चालू रखल जाए।

अध्यासीन सदस्य (श्री अरुण कुमार) : प्रस्न ई हे कि ई संकल्प के अगला सत्र ला रखल जाए। परस्ताव स्वीकृत भेल।

दूसर सत्र में 21 फरवरी, 1975 के ई संकल्प आयल ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. बिहार विधान परिसद में गैर सरकारी परस्ताव काहेला लावल गेल?
2. परस्ताव के उठउलक?
3. बिहार के तीन गो प्रमुख छेतरीय भासा कउन-कउन हे?
4. परस्ताव में बातचीत में के-के भाग लेलन?
5. मगही भासा के भौगोलिक छेत्तर बतलावऽ?
6. दूसर सत्र में मगही के परस्ताव कब आयल ?

लिखित :

1. संविधान में छेतरीय भासा के बारे में का प्रावधान हे?
2. परस्ताव लयला पर सदन में सोरगुल काहे भेल?
3. परस्तावक श्री रामईश्वर सिंह (M.L.C.) मगही के पच्छ में कउन-कउन बिन्दु रखलन?
4. मगही के साथ दुरंगा बेवहार होवे के का कारन हे?
5. मगही के पढ़ाई से मगध इलाका के जनता के का-का लाभ होवत?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सबद से वाक्य बनावऽ :

   मान्यता, प्रादेसिक, स्वाभाविक, संविधान, विस्वविद्यालय

2. पाठ में आयल तत्सम सबद के चुनके एगो सूची बनावऽ।

3. नीचे लिखल के पर्यायवाची सबद बतावऽ :

खुसी, बच्चा, इस्कूल, चाह, अस्थान

4. नीचे लिखल कउन संग्या हे :

पटना, भागलपुर, मंतरी, भासा, संविधान, सिच्छा

योग्यता-विस्तार :

1. मगही भासा के विकास से संबंधित कोई नेता के भासन चुन के लावऽ।
2. मगही भासा के विकास पर विद्यालय में एगो परिचर्चा आयोजित करऽ।

●

मैथिली छेत्तर के लोग हथ ऊ लोग अप्पन बच्चा के मैथिली में ही प्राइमरी सिच्छा देवऽ हथ। हम एकरा सपोर्ट में बोल रहली हे, लेकिन हम कहना चाहऽ ही कि जब मैथिली छेत्तर के जे लोग हथ, राज्य सरकार ऊ लोगिन ला ई तरह के इन्तजाम कैलक हे कि उनकर बच्चा के मैथिली में ही सिच्छा मिले के चाही तऽ काहे न भोजपुरी आउ मगही भासा–भासी लोगिन के बच्चा ला अइसने बेवस्था करल जाए?

अध्यच्छ महोदय, एकरा में दो मत नयँ हो सकऽ हे। संविधान में जे परस्तावना, हे, हम ओकर समर्थन करऽ ही। मैथिली भासा में भी अपने प्राइमरी एडुकेसन के इन्तजाम करवयली हे, इस्कूल आउ विस्वविद्यालय स्तर पर एकर पढ़ाई करावल जा रहल हे। एकरे हम विस्तार चाहऽ ही। हम एकर विरोध में नयँ ही। लेकिन एही तरह भोजपुरी आउ मगही के भी विस्तार होय। हमनी देख रहली हे कि भोजपुरी के अस्थान विस्वविद्यालय स्तर में आ गेल हे आउ बिहार विस्वविद्यालय में अपने एकर पढ़ाई के इन्तजाम भी करवयली हे।

श्री माहेश्वरी सिंह "महेश" : एकरा पास करवाना चाहऽ ही कि सिरिफ बोलना चाहऽ ही।

श्री रामईश्वर सिंह–तऽ अध्यच्छ महोदय, हम कह रहली हे कि जब अपने भोजपुरी के स्थान देली हे, मैथिली के स्थान देली हे आउ पटना युनिवर्सिटी में एकर पढ़ाई भी लागू करे जा रहली हे आउ सायद एकर-पढ़ाई भी चालू हो गेल हे, तऽ हमनी ई तरह के बात सोच रहली हे कि मगही के भी पढ़ाई सुरू करल जाए। ई से जब मैथिली आउ भोजपुरी दुन्नो के प्रावधान हो गेल हे तऽ मगही के भी प्रावधान होवे के चाही आउ एकर भी पढ़ाई होवे के चाही। ई भासा अबले उपेच्छित पड़ल हे। रामाश्रय बाबू के हम ई संबंध में पहले भी इसारा करली हल। रामाश्रय बाबू मगही इलाका के मंतरी होला के बावजूद ई भासा के उपेच्छित रखले हथ, एकरा से थोड़ा–सा हमनी के तकलीफ हे। अध्ययच्छ महादेय, ई से हम ई अभिस्ताव के सदन में रखली हल। मगही के आउ जादे अपने उपेच्छित नयँ रख सकऽ ही। एकरो भी पाठ्यक्रम में लावे पड़त।

अध्यासीन सदस्य (श्री अरुण कुमार) : अब समय समाप्त हो गेल। अब प्रस्न ई हे कि ई प्रस्ताव के अगला सत्र के कार्जक्रम में रखल जाय इया नयँ। आप ई संबंध में परस्ताव कर दीं।

श्री रामईश्वर सिंह : भागलपुर में मैथिली आउ मगही भी बोलल जा हे।

श्री जागेश्वर मंडल : भागलपुर में मगही नयँ बोलल जाहे।

श्री रामईश्वर सिंह : अब हम भोजपुरी के भौगोलिक छेत्तर बतावे जा रहली हे, भोजपुरी राँची में भी बोलल जा हे।

श्री राम लखन पांडे : पलामू में भी।

श्री रामईश्वर सिंह : पलामू में भी बोलल जा होत, हो सकऽ हे ई संबंध में अपने के जादे जानकारी होयत । मगही के भौगोलिक छेत्तर पटना, गया, नालंदा, मुँगेर आउ भागलपुर के कुछ बोर्डर एरिया हे आउ हजारीबाग, राँची, सिंहभूम आउ पलामू के आदिवासी छेत्तर छोड़ के।

श्री जागेश्वर मंडल : भागलपुर में मगही नयँ बोलल जा हे।

श्री रामईश्वर सिंह : हम तो कह रहली हे कि भागलपुर के कुछ अंस में मगही बोलल जा हे। मुँगेर के बाद जे बोर्डर-एरिया हे, ऊ भागलपुर कहलावऽ हे उहाँ मगही बोलल जा हे। हो सकऽ हे कि अपने सर्वेच्छन कइली होयत आउ अपने के ई संबंध में जानकारी मिलल होयत कि कहाँ–कहाँ नयँ बोलल जा हे। ई तो हम एरिया बतलउली हे। पटना, गया, मुँगेर आउ नालंदा ई सब जे छेत्तर हे, उनकर भी कउनो भौगोलिक इलाका हे, जहाँ कोई भासा बोलल जा होत, उहे भासा मगही हे। ओकरे बारे में बतलावे ला चाहित ही।

(सदन में सोरगुल)

अध्यच्छ महोदय, हम अपने के ध्यान एही ओर ले जा रहली हल कि

जब अँगरेजी राज्य हल तऽ ऊ बखत हिन्दी के कोई बोलबाला नयँ हल न ऊ तरह के कोई समस्या हमरा सामने आ रहल हल। लेकिन जब से भारत आजाद होल, तब से हमलोगिन हीं कोई विवाद न भेल तब दूसर एगो समस्या आवऽ हे कि जइसे कि संविधान में चर्चा हे कि जउन बच्चा जउन इलाका के हे, ऊ बच्चा के ओही इलाका के छेतरीय भासा में प्राइमरी एडुकेसन के इन्तजाम होवे के चाही। अध्यच्छ महोदय, हम एकरा साथ ही, ई तरह के पौलिसी ठीक हे आउ ई पौलिसी के अन्तर्गत उर्दू भासा–भासी आवऽ हथ आउ ऊ अप्पन बच्चा के उर्दू में पढ़ावऽ हथ। बंगाली लोग अप्पन बच्चा के बंगला में पढ़ावऽ हथ आउ आदिवासी छेत्तर के जे भासा–भासी हथ ऊ अप्पन बच्चा के आदिवासी भासा में पढ़ावऽ हथ तथा जे